

जीवदयापगरणं
जीवदयाप्रकरणम्
JIVADAYA PRAKARANA
A Conspectus on Compassion Towards All Living Beings

Original Prakrit Text Composed by Anonymous

Prakrit Text Edited by Dr Kamal Kumar Jain (BORI)
Hindi & English translations by Manish Modi

जीवदयापगरणं

संसयतिमिरपयंगं भविययाणकुमुयपुण्णिमाइंदं ।
कामगइंदमइंदं जगज्जीवहियं जिणं नमिउं ॥१॥

पंचमहव्वयगुरुभारधारणं पंचसमिणतिगुत्ते ।
नमिउणसयलसमणे जीवदयापगरणं वुच्छं ॥२॥

सूरज की तरह संशय के अन्धकार का नाश करनेवाले, पूनम के चाँद जैसे भव्यजनरूपी कुसुम को आनन्दित करनेवाले, सिंह के समान कामरूपी हाथी को पराजित करनेवाले, जगत के हितकारक जिनवर को नमन करके...

पाँच महाव्रतों के गुरुभार के धारक, पाँच समिति एवं तीन गुप्तियों को पालनेवाले सभी श्रमणों को नमन करके मैं जीवदयाप्रकरण कहता हूँ।

I worship the Jina, who is supremely beneficial to all living beings in the universe.
Like the Sun, the Jina destroys the darkness of doubt.
Just like the full Moon, the Jina gives bliss to the lotus-like beings capable of attaining liberation.
Like a lion, the Jina defeats the elephant of passion.

I bow to all the śramaṇas {self-reliant ascetics} who bear the significant burden of the five major vows and practise the five samitis (5 types of carefulness) and three guptis (3 controls) and commence this Conspectus on Compassion towards all Living Beings.

पालितयच्छंदं सुत्तं अत्थं च नेय जाणामि ।
न य वागरणे वि विउ देसी तह लक्खणं वुच्छं ॥३॥

न तो मैं पादलिप्त सुरि द्वारा रचे छन्दशास्त्र को, न उसके अर्थ को और न ही मैं व्याकरणशास्त्र को जानता हूँ। इसलिये मैं जीवदया के लक्षणों को देशी भाषा (प्राकृत) में कहूँगा।

I neither know the rules laid down by Pādalīpta Sūri (regarding metrical poetic composition). Nor am I an expert on grammar. So I shall explain the characteristics of universal compassion in the Deśī language (Prakrit).

एयारिसयस्स महं खमियच्चं पंडिएहिं पुरिसेहिं ।
ऊणाइरित्तयं जं हविज्ज अन्नाण दोसेण ॥४॥

मेरे इस अज्ञान दोष से जो कुछ भी न्यूनाधिक कहा जाये उसे पण्डित पुरुष क्षमा करें।

Hence, I request scholars who read this work to kindly forgive the shortcomings and excesses that arose out of my ignorance.

मग्गइ सुक्खाइं जणो ताइ य सुक्खाइं हुंति धम्मणे ।
धम्मो जीवदयाए जीवदया होइ खंतीए ॥५॥

लोग जिन सुखों को माँगते हैं वे धर्म के द्वारा प्राप्त होते हैं। धर्म जीवदया से होता है और जीवदया क्षमा से होती है।

The happiness people seek is attained through dharma. You attain dharma through compassion, and compassion through universal forgiveness.

परवंचणानिमित्तं जंपइ अलियाइं जणवओ नृणं ।
जो जीवदयाजुतो अलिण न सो परं दुहइ ॥६॥

लोग दूसरों को ठगने के लिये ही झूठ बोलते हैं। जिसमें जीवदया होती है वह असत्य से दूसरों का दिल नहीं दुखाता।

Man lies to deceive others. One who has compassion does not hurt others by lying to them.

तणकट्ठं व हरंतो दुम्मइ हिययाइ निग्घिणो चोरो ।
जो हरइ परस्स धणं सो तस्स विलुपए जीवं ॥७॥

निर्दय चोर तृण-काष्ठ भी चुराता है तो दूसरों के दिल को दुःखी करता है। जो दूसरे के धन को चुराता है वह तो मानो उनके प्राणों का ही हरण कर लेता है।

One is heartbroken even when a thief steals grass and wood. Stealing another man's wealth is akin to destroying his life.

Note:

We are so attached to wealth and property that we are upset even when something of negligible value is lost. What if we were to lose all our wealth? The anguish we would experience is not dissimilar to the agony of death.

दव्वे हयम्मि लोओ पीडिज्जइ माणसेण दुक्खेण ।
धणविरहिओ विसूरइ भुक्खा मरणं च पावेइ ॥८॥

जिसका धन चोरी हो जाता है उसे मानसिक दुःख होता है। धनविहीन व्यक्ति विलाप करता है और भूख से मर भी सकता है।

Victims of robbery undergo great mental anguish. A pauper weeps and can even die of hunger.

एएण कारणेणं जो जीवदयालुओ जणो होइ ।
सो न हरइ परदव्वं परपीडं परिहरंतो उ ॥९॥

इसलिये जो जीवदया पालते हैं, वे न तो परपीड़न करते हैं और न ही परधन चुराते हैं ।

This is why those who are compassionate neither harm nor steal from others.

सव्वायरेण रक्खइ निययं दारं च निययसत्तीए ।
एएण कारणेणं दारं लोयाण सव्वस्सं ॥१०॥

लोग अपनी पूरी ताकत से, सभी प्रयत्नों के द्वारा अपनी पत्नी की रक्षा करते हैं। इसलिये पत्नी ही इन लोगों के लिये सर्वस्व होती है।

A man protects his wife with all his might. Hence, his wife is everything to him.

न य तह दूमेइ मणं धणं च धन्नं जणस्स हीरंतं ।
जह दूमिज्जइ लोओ नियदारे विद्विज्जंते ॥११॥

किसी का धन-धान्य चोरी भी हो जाये तो उतना दुःख नहीं होता जितना पत्नी का विप्लव होने पर होता है।

Even getting robbed of wealth and possessions does not cause people as much anguish as the violation of their wives!

जो जीवदयाजुत्तो परदारं सो न कहवि पत्थेइ ।
नूणं दाराण कए जणोवि दव्वं समज्जेइ ॥१२॥

जो मनुष्य जीवदयायुक्त है वो कभी भी परस्त्री की अभिलाषा नहीं करता। यह बात पक्की है कि मनुष्य धन तो पत्नियों के लिये ही कमाते हैं।

Those who have compassion never covet another man's wife. Men work hard to earn money for the sake of their wives.

Note:

In the temporal world, people treasure money over everything else. But people earn money for the sake of their wives. Hence, those who have compassion never cover other people's wives.

जारिसया उप्पज्जइ मह देहे वेयणा पहारेहिं ।
तारिसया अन्नाणवि जीवाणं मूढ! देहेसु ॥१३॥

अरे मूढमति! जैसे मार पड़ने पर मेरी देह को वेदना होती है, उसी प्रकार दूसरों को भी मार पड़ने पर होती है।

O foolish one! Just as my body experiences pain upon being hit, others' bodies also experience pain from being hit.

जो देइ परे दुक्खं तं चिय सो लहइ लक्खसयगुणियं ।
बीयं जहा सुखेते वावियं बहुफलं होइ ॥१४॥

जो दुःख हम दूसरों को देते हैं, वही दुःख हमें लाख गुना मिलते हैं। जैसे उपजाऊ भूमि में बीज बोने से बहुत अच्छी फसल प्राप्त होती है।

Like seeds sown on fertile soil, one who harms others receives a lakh times more grief.

सयलाणंपि नईणं उवही मत्तण नत्थि आहारो ।
तह जीवदयाए विणा धम्मोऽवि न विज्जए लोए ॥१५॥

जैसे समुद्र के अलावा नदियों का आधार नहीं वैसे ही बिना जीवदया के इस लोक में धर्म भी विद्यमान नहीं रहता।

Just as rivers cannot exist without the ocean, dharma without compassion cannot exist in this world.

इक्कच्चिय जीवदया जणेइ लोयम्मि सयलसुक्खाइं ।
जह सलिलं धरणिगयं निप्फायइ सयलसस्साइं ॥१६॥

एक जीवदया ही लोक में सभी सुखों को जन्म देती है। जैसे भूमि में सींचा हुआ पानी सभी धान्यों को उत्पन्न करता है।

Just as water permeates the ground and gives rise to all crops, compassion gives rise to all the happiness in the world.

न य किंचि इहं लोए जीयाहिंतो जियाण दइयं परं ।
अभयपयाणाओ जगे नहु अन्नं उत्तमं दाणं ॥१७॥

इस लोक में जीवों को अपने प्राण से अधिक कुछ भी प्रिय नहीं है। इसलिये जगत में अभयदान से श्रेष्ठ कोई दान नहीं।

In this world, there is nothing more beloved to people than their own lives. Hence, the gift of life is the greatest gift of all.

पाणिवहपायवाओ फलाइं कडुयाइं हंति घोराइं ।
न य कडुयबीयजायं दीसइं महुरं फलें लोए ॥१८॥

प्राणिवधरूपी वृक्ष से अत्यन्त कड़वा फल उत्पन्न होता है। कड़वे बीज से उपजा मीठा फल लोक में दिखाई नहीं पड़ता।

The tree of violence bears extremely bitter fruits. Nowhere in this world does one find a bitter seed giving rise to sweet fruit.

निंबाओ न होइ गुलो उच्छू न य हंति निंबगुलियाओ ।
हिंसाफलं न होइ सुखं न य दुःखं अभयदानेणं ॥१९॥

जैसे कड़वी नीम से गड़ नहीं बनता तथा निम्बगुलिका से गन्ना नहीं उगता, उसी प्रकार हिंसा का फल कभी सुखदायक नहीं होता और अभयदान कभी भी दुःखदायक नहीं होता।

Just as jaggery cannot be made from bitter neem, sugarcane juice cannot be extracted from neem fruit and violence cannot lead to happiness, abhaya dāna does not result in sorrow.

Note:

Abhaya dāna = the gift of life

जो देइ अभयदानं देइ य सुखाइं सव्वजीवाणं ।
उत्तमठाणम्मि ठिओ सो भुजइ उत्तमं सुखं ॥२०॥

जो अभयदान देता है और सभी जीवों को सुख देता है वह उत्तम स्थान पाकर उत्तम सुखों का भोग करता है।

One who grants abhaya dāna and bliss to all living beings attains rebirth in a good place and enjoys the best of pleasures.

लोभाओ आरंभो आरंभाओ य होइ पाणिवहो ।
लोभारंभनियते नवरं अह होइ जीवदया ॥२१॥

लोभ से हिंसा होती है और हिंसा से प्राणिवध होता है। इसलिये जीवदया उसी आत्मा में होती है जो लोभ और हिंसा से मुक्त होती है।

Greed leads to violence, and violence leads to death. Only a soul free from greed and violence can possess compassion.

तो जाणिऊण एयं मा मुज्झह अत्तणो सकज्जेसु ।
सव्वसुहकारणाणं बीयं ता कुणह जीवदयं ॥२२॥

यह जानकर आत्मा को मोह से बचाना चाहिये और जीवदया हमेशा पालनी चाहिये क्योंकि जीवदया ही सभी सुखों की बीजरूप है।

इस प्रकार जानकर मोहवश अपने स्व-कार्य (कर्तव्य) को मत त्यागना। जीवदया समस्त सुखों के कारणों में बीजभूत (मूलभूत) है। उसका पालन अवश्य करो।

Know this and do not allow your soul to get misled by delusion. Practise compassion as it is the seed of all joy.

इय जाणिऊण एयं वीयं सह अप्पणा पयत्तेण ।
जो धम्माओ चूक्को चूक्को सो सव्व सुक्खाणं ॥२३॥

यह बात समझकर आत्मा के प्रयत्न से इस पर चिन्तन करें। जो धर्म से चूक गया समझो सभी सुखों से चूक गया।

Understand this and let your soul endeavour to ponder the importance of compassion. One who fails to practise dharma loses out on all kinds of happiness.

धम्मं करेह तुरियं धम्मेण य होंति सव्वसुक्खाइं ।
जीवदयामूलेण पंचिदियनिग्गहेणं च ॥२४॥

तुरन्त ही धर्म का पालन करें। जीवदयामूलक पंचेन्द्रियनिग्रह से परिपूर्ण धर्म से ही सारे सुख प्राप्त होते हैं।

Practise dharma immediately. Dharma focussed on compassion and control of the five senses is the cause of all happiness.

जं नाम किंचि दुक्खं नारयतिरियाण तह य मणुयाणं ।
तं सव्वं पावेणं तम्हा पावे विवज्जेह ॥२५॥

नारकी, तिर्यञ्च तथा मनुष्यों को जो भी दुःख हैं वे सभी पाप की वजह से हैं। इसलिये पापों का त्याग करें।

All the pain and sorrow endured by humans, hellish beings, plants, insects, birds and animals are the wages of sin. One must, therefore, give up sinning.

नरनरवइदेवाणं जं सुक्खं सव्वं उत्तमं होइ ।
तं धम्मेण विटप्पइ तम्हा धम्मं सया कुणह ॥२६॥

मनुष्यों, राजाओं तथा देवों के जो सर्वोत्तम सुख हैं, वे सभी धर्म से मिले हैं। इसलिये सदा धर्म करें।

Humans, kings and celestial beings attain the greatest happiness by practising dharma. Hence, always practise dharma.

जाणइ जणो मरिज्जइ पिच्छइ लोयं मरंतयं अन्नं ।
नय कोइ जए अमरो कह तह वि अणायरे धम्मो? ॥२७॥

लोग जानते हैं कि मृत्यु निश्चित है तथा कोई भी अमर नहीं। वे अन्य लोगों को मरते हुए भी देखते हैं। फिर क्यों धर्म का अनादर करते हैं ?

People know that death is a certainty. They see others dying and realise that no one is immortal. Then why do people disrespect (fail to practise) dharma?

उच्छिन्ना किं नु जरा नट्ठा रोगा किं मयं मरणं? ।
ठइयं च नरयदारं जेण जणो न कुणए धम्मं ॥२८॥

क्या बुढ़ापा समाप्त हो गया है? क्या रोग नष्ट हो गये हैं? क्या मृत्यु की मौत हो गयी है? क्या नरक के द्वार बन्द हो गये हैं कि जिससे लोग धर्म नहीं करते?

Has old age disappeared? Has disease been conquered? Has death died?
Have the doors to hell been sealed off so that people don't practise dharma?

दूसहदुहसंतावं ताव उ पावित्ति जीव संसारे ।
जाव न सुह-सत्ताणं सत्ताणं जंति समभावं ॥२९॥

इस संसार में जीव तब तक दुःसह दुःखों का सन्ताप झेलते हैं जब तक वे यह समझकर कि सभी जीव सुखेच्छू हैं, सभी जीवों के प्रति समताभाव प्राप्त नहीं कर लेते।

In this world, people suffer from unbearable pain, agony and remorse until they develop equanimity towards all worldly beings realising that everyone is looking for happiness.

धम्मो अत्थे कामो अन्ने जे एवमाइया भावा ।
हरइ हरंतो जीयं अभयं दित्तो नरो देइ ॥३०॥

मनुष्य की हत्या करने पर उसके धर्म, अर्थ, काम तथा अन्य सभी भाव उसकी हत्या करनेवाला हर लेता है। उसे अभयदान देनेवाला उसको वे सभी भाव देता है।

All the dispositions of a person, such as dharma {piety and compassion}, artha {profit}, kāma {pleasure} and others, are destroyed when he dies. One who kills a person deprives him of these dispositions. One who gives him abhaya dāna (respects his right to life and peace) reinstates these dispositions.

सो दाया सो तवसी सो हि सुही पंडिओ य सो चेव ।

जो सयलसुखबीयं जीवदयं कुणइ खंतिं च ॥३१॥

जीवदया तथा क्षमाभाव सभी सुखों के बीज हैं। जो जीवदया तथा क्षमाभाव धारण करते हैं वे ही दाता हैं, वे ही तपस्वी हैं, वे ही पण्डित हैं और वे ही सुखी हैं।

Compassion and forgiveness are the seeds of bliss. Only the one who practises them is the real donor, the real ascetic and the real scholar. Only he attains true happiness.

किं पढिएण सुएण व वक्खाणियएण काइ किं तेण ।
जत्थ न विज्जइ एयं परस्स पीडा न (का)यच्चा ॥३२॥

जहाँ दूसरे को कष्ट नहीं देना है यह सीख विद्यमान न हो, ऐसी बात पढ़ने, सुनने या उसका व्याख्यान करने का क्या फ़ायदा?

What is the point in reading, listening to or giving lectures when the most important teaching of not harming others missing?

जो धम्मं कुणइ जणो पुज्जिज्जइ सामिओ व्व लोएणं ।
दासो पेसुव्व जहा परिभूओ अत्थतल्लिच्छो ॥३३॥

जो धर्म पालता है वह लोक में स्वामी के समान पूजा जाता है। जो धनलोलुप है वह दास या सेवक की तरह पराभूत होता है।

He who practices dharma is worshipped like a lord by the world. He who worships wealth is humiliated like a slave or a servant.

मा कीरउ पाणिवहो मा जंपह मूढ! अलियवयणाइं ।
मा हरह परधणाइं मा परदारे मई कुणह ॥३४॥

अरे मूढ़मति! प्राणिवध मत करो! झूठ मत बोलो! परधन मत हरो! परस्त्री की इच्छा मत करो!

O foolish one, do not take anyone's life, do not lie, do not steal and do not covet another man's wife.

सयणे य धणे तह य परियणे य को कुणइ सासयाबुद्धी ।
अणुधावन्ति कुढेणं रोगा य जरा मच्चू य ॥३५॥

ऐसा कौन है जो स्वजनों को, धन को तथा परिजनों को शाश्वत मानता है? रोग, बुढ़ापा तथा मृत्यु हमारे पीछे ऐसे दौड़ते हैं मानो कोई खोई हुई वस्तु ढूँढ रहा हो।

Who considers the presence of loved ones, wealth and family as being permanent? Disease, old age and death chase us as people search for lost items.

परमेसरमाई या ता पिच्छह जाव डुंबचंडाला ।
कस्स ण जायइ दुक्खं सारीरे माणसं चेव ॥३६॥

परम ऐश्वर्य से युक्त श्रीमन्तों से लेकर चाण्डाल तक को देखिये, इन में से कौन है जो शारीरिक अथवा मानसिक दुःख से परेशान नहीं?

Whether a multi-millionaire or a humble crematorium worker, who is free from physical and mental grief?

अइढा भोगासत्ता दुग्गय पुण पुट्टभरण तल्लिच्छा ।
तो वि न कुणंति धम्मं कह पुण सुक्खं जए होउ ? ॥३७॥

पैसेवाले भोगों में डूबे हैं और गरीब आदमी पेट भरने की कोशिश में लगे हैं। दोनों धर्म नहीं करते। तो फिर जगत में सुख कैसे मिलेगा?

The rich are immersed in sensual pleasures while the poor struggle to procure two square meals. No one practises dharma. Then how can there be happiness in saṃsāra?

दियहं करेइ कम्मं दारिददाहिं पुट्टभरणत्थं ।
रयणीसु णेय निददा चिंताए धम्मरहियाणं ॥३८॥

दरिद्रता से पीड़ित धर्मरहित व्यक्ति दिन में पेट भरने के लिये काम करते हैं और रात को उन्हें चिन्ता के मारे नीन्द नहीं आती।

Those who suffer from poverty and do not practise dharma work hard during the day to feed themselves and cannot sleep at night because they worry so much.

मणिधणकणगसमिदधा धन्ना भुंजंति केई जे भोगे ।
ते आसाइय सुक्खं पुणो वि धम्मं चिय कुणंति ॥३९॥

ऐसे भी हैं जो मणि, धन और कंचन से समृद्ध हैं तथा कई भोगों को भोगते हैं। वे उत्तम सुखों का भोग करके भी धर्म में लीन रहते हैं। वे धन्य हैं।

Praiseworthy are those who practise dharma constantly. They possess gems, money and gold. They enjoy the pleasures of life and continue to practise dharma.

(Those who possess puṇyānubandhī puṇya, enjoy the pleasures of life and continue to practise dharma. Their puṇyānubandhī puṇya enables them to do good deeds while enjoying the fruits of puṇya)

जे पुण जम्म-दरिददा दुहिया परपेसरोगमग्घाया ।
काऊण ते वि धम्मं दूरं दुक्खाण वच्चंति ॥४०॥

जो जन्म से ही गरीब हैं, दुःखी हैं, दूसरों के दास हैं, रोगग्रस्त हैं - ऐसे लोग भी धर्म पालकर दुःखों से दूर हो जाते हैं।

Even those born in penury and suffering from misery, illness and forced servitude, rid themselves of grief by practising dharma.

जो कुण्ड मणे खंती जीवदया मद्वज्जवं भावं ।
सो पावइ णिव्वाणं न य इंदियलंपडो लोओ ॥४१॥

जो मन में क्षमा, जीवों के प्रति दया, मृदुता तथा ऋजुता के भाव रखते हैं, वही जीव निर्वाण अर्थात् मोक्ष प्राप्त करते हैं, न कि इन्द्रियों के विषयों में लम्पट लोग।

Only those who practise forgiveness, compassion, gentleness and honesty attain liberation. Not the hedonists who constantly seek sensual pleasure.

जो पहरइ जीवाणं पहरइ सो अत्तणो सगत्तेसु ।
अप्पाणं जो वइरी दुक्ख-सहस्साण सो भागौ ॥४२॥

जो अन्य जीवों पर प्रहार करता है, वह अपने ही शरीर पर प्रहार कर रहा है। इसलिये वह अपना ही शत्रु है। उसे हजारों दुःख झेलने पड़ते हैं।

He who hits others is (effectively) hitting himself. Therefore, he is his own worst enemy. He shall suffer thousands of sorrows.

जो कुण्ड जणो धम्मं अप्पाणं सो सया सुहीं कुण्ड ।
संचयपरो य सुच्चिय संचिय सुहसंचओ जेण ॥४३॥

जो धर्म पालता है वह सदा अपनी आत्मा को सुखी करता है। संचय में तत्पर वही है जो सुकृतों का संचय करता है। ऐसा व्यक्ति सच्चे सुख को प्राप्त करता है।

One who practises dharma certainly attains spiritual bliss. He who is constantly and keenly engaged in earning the wealth of good deeds excels at collecting. Such a person attains true bliss.

Note:

One who constantly commits good deeds internalises dharma by remaining engaged in it constantly and shall, therefore, attain the true bliss of liberation.

जो देइ अभयदाणं सो सुक्खसयाइं अप्पणो देइ ।
जेण न पीडइ परं तेण न दुक्खं पुणो तस्स ॥४४॥

जो अभयदान देता है वह स्वयं को सैकड़ों सुख देता है क्योंकि जो दूसरों को पीड़ा नहीं देता उसे कभी दुःख नहीं मिलता।

He who allows other living beings to live unharmed has granted himself hundreds of joys because one who does not harm others shall in turn not suffer from sorrow.

जह देउलस्स पीढो खंधो रुक्खस्स होइ आहारो ।
तह एसा जीवदया आहारो होइ धम्मस्स ॥४५॥

जैसे मन्दिर भूमि पर स्थापित होता है और वृक्ष अपने तने पर आधारित होता है, उसी प्रकार धर्म जीवदया पर आधारित है।

Just as land supports a temple and the trunk is the mainstay of a tree, compassion is the foundation of dharma.

जो होइ जणो जोगो तेलुक्के उत्तमाण सुक्खाणं ।
सो एयं जीवदयं पडिवज्जइ सव्वभावेण?(भावाणं) ॥४६॥

जो तीन लोक के उत्तम सुखों को पाने के योग्य होता है वह सर्व भावों से इस जीवदया की प्रवृत्ति करता है।

He who is worthy of the supreme joys of the three worlds practices compassion with all his heart, in all ways possible.

जीवदया सच्चवयणं परिधण-परिवज्जणं सुसीलं तं ।
खंती पंचिंदिय-निग्गहो य धम्मस्स मूलाइं ॥४७॥

जीवदया, सत्यवचन, परधन-परिहार, सुशीलता, क्षमाशीलता तथा पंचेन्द्रियनिग्रह धर्म के मूल हैं।

These are the foundations of dharma: Universal compassion, truthfulness, not stealing from others, celibacy, forgiveness, equanimity and control of the five senses.

भयरोगसोगजरमरणगब्भ दुव्विसह वेयणाइ न्णं ।
इट्ठ-वियोगासार किं न मुणह एरिसं लोगं ॥४८॥

भय, रोग, शोक, बुढ़ापा, मृत्यु, पुनर्जन्म की दुःसह वेदनाओं से भरा यह संसार इष्टवियोग की वजह से असार है। क्या आपको यह मालूम नहीं?

This world is full of unbearable agonies. It is filled with fear, disease, sorrow, old age, death and rebirth. It is impermanent and worthless. The loss of loved ones is constant. Worldly sorrows are borne with great anguish. Don't you know all this?

बालत्तणए तह जुव्वणे य मज्झिमवए य थेरत्ते ।
मरणभए णुव्विगं किं न मुण एरिसंलोयं ॥४९॥

बचपन हो या जवानी, अधेड़ उम्र हो या बुढ़ापा, मृत्यु के भय से कोई मुक्त नहीं। क्या आप मृत्युभय से उद्विग्न लोगों को जानते नहीं हैं?

People fear death irrespective of whether they are children or youths or middle-aged people or older folks. Do you not know such people?

दुब्बिक्ख-डमर-तक्कर दुह सयदू मिज्जमाण दुम्मणसं ।
इट्ठ-विओगाइल्लं किं न मुणह एरिसं लोयं? ॥५०॥

दुष्काल, उपद्रव, तस्करी तथा इष्टवियोग से परेशान यह संसार सैकड़ों दुःखों के बोझ तले दबा हुआ है। क्या आप इस बात को नहीं जानते?

This world is full of calamities like famines, tempests, robbery and tyranny. People live in constant fear of losing their loved ones. Do you not know this?

कुलबालियाण रंडत्तणाइ तारुण्णए य दोहग्गं
पियविप्पओग-दुहियं किं न मुणह एरिसं लोयं? ॥५१॥

कुलबालिकाओं को यौवन में ही वैधव्य का दुर्भाग्य झेलना पड़ता है। क्या आप प्रियजनों के वियोग से दुःखित इस संसार को नहीं जानते?

Even girls from good families have to suffer misfortunes like early untimely widowhood. This world is constantly aggrieved by the loss of loved ones. Do you not know this?

रायभयगरुऽपीडियकालिय वट्ठंत जणिय संतावं ।
दुहिय-किलेसबहुलं किं न मुणह एरिसं लोयं? ॥५२॥

आप यह क्यों नहीं जानते कि यह संसार राजभयरूपी गरुड़ से पीड़ित है, काल का ग्रास बनने से सन्तप्त है एवं दुःख और क्लेश से भरा हुआ है।

This world lives in fear of the vulture-like ruler. It is anguished by the dreaded pain of death. It is full of sorrow and remorse. Do you not know this?

परक्कमेण क्कं निच्चं चिय पुट्टभरणतल्लिच्छं ।
धम्मसुइ विप्पणट्ठं किं न मुणह एरिसं लोयं? ॥५३॥

क्या आप ऐसे लोगों को नहीं जानते जो दूसरों के लिये मजदूरी करने के भार के नीचे दबे हुए, पेट भरने की अभिलाषा में जीते हुए धर्मश्रवण से बहुत दूर रह जाते हैं?

Don't you know people who are exhausted by the burden of having to slave for others? They wish to feed themselves and are deprived of the opportunity of listening to dharma.

कामेण अत्थ परमग्गमणेण तह चेव दाण ग्रहणेण ।
णिदंदिपि अलहमाण किं न मुणा एरिसं लोयं? ॥५४॥

आप यह क्यों नहीं जानते कि यह संसार कामनाओं से, अर्थ परिग्रह और दान ग्रहण करने की इच्छा से परेशान रहता है? चिन्ता के मारे लोग सो भी नहीं पाते।

Why don't you realise that this world is in pain because of desire, greed and the wish to seek alms from others? So worried are they about money that they are unable to sleep.

खण रुठं खण तुट्ठं, खणमित्तं चेव णुण वेलवियं ।
खणदिट्ठ-नट्ठसुक्ख किं न मुणह एरिसं लोयं? ॥५५॥

जो क्षण में रुष्ट और क्षण में तुष्ट हो जाता है, क्षण भर में मित्र बन जाता है, कष्टों से भरपूर है, जिसके पास सुख भी ऐसा है जो अभी तो दिखता है और क्षण भर में नष्ट हो जाता है, क्या आपने ऐसे लोगों को नहीं देखा?

Don't you know that this world is a place where anger can turn to warmth in moments, where friendship is fleeting, where grief abounds and even clear and present joy can turn to sorrow in moments?

सारीरमाणसे हि य दुक्खेहि समुत्थयं निराणंदं ।
अप्पसुहं बहुदुक्खं किं न मुणह एरिसं लोयं? ॥५६॥

यह संसार शारीरिक तथा मानसिक दुःखों से ढँका हुआ है, निरानन्द है, अल्प सुख और बहुत दुःखों से ग्रसित है। क्या आप इससे अनभिज्ञ हैं?

This world is overflowing with physical and mental misery. It is a joyless place. People are stuck with fleeting pleasure and constant pain. Do you not know this?

द्वज्जिमिय-दुन्नियत्थं, दुज्जण-दुव्वयण-दुमिय-सरीरं ।
चिंता-दूमिय-मणसं किं नु मुणह एरिसं लोयं? ॥५७॥

जिनके न भोजन का ठिकाना है न वस्त्रों का, दुर्जनों के दुर्वचनों से पीड़ित हैं जिनके जिस्म, चिन्ताओं से घिरे हुए हैं जिनके मन, यही संसार की स्थिति है। क्या आप इससे अनभिज्ञ हैं?

The world struggles to get enough to eat, has to wear filthy clothes and suffers from illnesses caused by the curses of wicked people. The mind is weighed down by worry. Why don't you realise this?

चंडालडुंब-रोरट्ठिएहिं सव्वाहिं अहमजाईहिं ।
मिच्छेहिं य पज्जत्तं किं न मुणह एरिसं लोयं? ॥५८॥

यह संसार चाण्डाल, डोम, मोरठ इत्यादि अधम जातियों से और म्लेच्छों से भरा हुआ है। क्या आप इससे अनभिज्ञ हैं?

This world is full of people who come from the lowest classes. Do you not know this?

जम्मणमरणरहहे अट्ठसुपहरेसुघडियदाविडए ।
घडिमालं व वहं तं किं न मुणह एरिसं लोयं ॥५९॥

यह संसार कुँ पर बनी रेहट के सामान है। आठों प्रहर इसमें जन्म-मृत्यु के घड़े डूबते-चढ़ते रहते हैं। क्या आप इससे अनभिज्ञ हैं?

This world is like the watering wheel built on a well. Just as the watering wheel takes down empty water buckets and brings up water buckets filled with water, the watering wheel of life constantly revolves endlessly through birth and death. Do you not know this?

वासारत्तधविदुलय विहुयं सि सिरसी य-संभिन्न ।
गिम्हे वि घम्म-णडियं न मुणह एरिसं लोयं ॥६०॥

यह संसार वर्षा ऋतु में बिजली के गिरने से पीड़ित होता है, शिशिर ऋतु में ठण्ड से काँपता है और ग्रीष्मकाल में गर्मी से व्याकुल रहता है। क्या आप इससे अनभिज्ञ हैं?

This world fears lightning during the rains, and it suffers from the biting cold of winter and the scorching heat of summer. Do you not know this?

परपेसदारा दुग्गयलेहारिय लोहलोलया बहुलं ।
पोट्टलिया सुय दुहियं किं न मुणह एरिसं लोयं? ॥६१॥

यह संसार सेवकों, दासों और लोभी व्यक्तियों से भरा पड़ा है। यहाँ कुछ लोग निःसन्तान रह जाते हैं और कुछ की दशा औलाद होते हुए भी बे औलाद जैसी है। हर कोई दुःखों की पोटली के भार के नीचे दबा जा रहा है। क्या आप इससे अनभिज्ञ हैं?

This world is full of people who are labourers, slaves and servants. They are greedy and burdened by the worries of life. Some are childless or have children who have not turned out well. Do you not know such people?

कण्णुट्ठिविन्नवयणं छिन्नं तह नासियाए अंगं च ।
कोढेणभिणिभिणंतं किं न मुणह एरिसं लोयं? ॥६२॥

इस संसार में कई लोग ऐसे हैं जो कष्ट रोग से पीड़ित हैं। उनके कान, आँठ, चेहरा तथा नाक छिन्न भिन्न हैं, विगलित हैं, शरीर से पीप रिस रही है जिस पर मक्खियाँ भिनभिना रही हैं। क्या आप ऐसे लोगों को नहीं जानते?

Many suffer from leprosy and their ears, lips, nose, etc. are missing. Or parts of their body are deformed. Their bodies secrete pus which attracts flies. Do you not know

such people?

काऊण पावं कम्मं गंतुं नरएसु तह य तिरिएसु ।
दुक्खाइं अणुहवंतं किं न मुणह एरिसं लोयं? ॥६३॥

यह संसार ऐसे लोगों से भरा हुआ है जो पाप कर्म करके नरक और तिर्यच गति में जाकर अनेकों दुःख अनुभव कर रहे हैं। क्या आप ऐसे लोगों को नहीं जानते?

People commit sins and are reborn in hell or as tiryāñcas {sub-human beings} like animals, birds, insects, reptiles, fish, etc. Do you not know such people?

पक्खिसिरीसिवजलयर चउप्पयाण य वह समुज्जतं ।
मणुएसु विहम्मंतं किं न मुणह एरिसं लोयं? ॥६४॥

क्या आप ऐसे लोगों को नहीं जानते जो सभी प्रकार के प्राणी — पक्षी, सरीसृप, जलचर तथा चतुष्पद — का वध करने में समुद्यत हैं तथा मनुष्यों को भी नहीं छोड़ते?

Some people are intent on killing all types of living beings, whether birds, reptiles, fish or four-legged animals. They do not even spare humans. Do you not know such people?

कररिवसभमहिस खरतुरयडवतह वेसराइ वामीसं ।
गुरुभारवहणखिन्नं किं न मुणह एरिसं लोयं? ॥६५॥

इस संसार में बैल, भैंसे, घोड़े, घोड़ी, खच्चर इस्तादि भार ढोने वाले जीव अधिक भार ढो-ढोकर थक गये हैं, खिन्न हैं। क्या आप इससे अनभिज्ञ हैं?

Pack animals like donkeys, buffaloes, oxen, horses, mares and mules, etc. are tormented by the excessive loads they are compelled to carry. Do you not know them?

पुढविजलजलणमारुयत्तण रुक्खवणस्सइहिं विविहाहिं ।
एएसु वि पज्जतं किं न मुणह एरिसं लोयं? ॥६६॥

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, तृण, वृक्ष, वनस्पति में विविध प्रकार के जीव विद्यमान हैं। इस प्रकार जीवराशि से ठसाठस लोक को क्या आप जानते नहीं?

(इसलिये उनके प्रति हिंसा करने का मतलब है कि आप अनगिनत जीवों के प्रति हिंसा कर रहे हैं)

The earth, water bodies, fire bodies, the air around us and various types of grass, trees and vegetation are all forms of life. Innumerable life forms live within them. Do you not know this?

Note:

Therefore, harming them means that you are committing violence against innumerable living

beings.

एवं जीवदयाविरहियस्स जीवस्स मुढहिययस्स ।
किं अत्थि किंचि सुक्खं तिलतुसमितं पि संसारे? ॥६७॥

इस प्रकार जीवदया से सर्वथा विहीन एवं मूढ़ हृदय वाले व्यक्ति के लिये इस संसार में तिलतुषमात्र भी सुख है क्या ?

Is there even an iota of happiness in this world for the ignorant heart bereft of all compassion?

Note:

The author gives the splendid analogy of the tip of a sesame seed to denote the minuteness of bliss available to one who lacks compassion.

जरजज्जिरिय कवाडयाइं दरभग्गभित्तिभागाइं ।
मडहाइं मंगुलाइं य गेहाइं भवणिरहियाइं ॥६८॥

(जो जीवदयाविहीन हैं) उन्हें ऐसे घरों में रहना पड़ता है जिनके किवाड़ जीर्ण शीर्ण हों, दीवारें भग्न हो गयी हों, जिनका आकार अत्यन्त संकरा हो, जो छाँवरहित हो, अप्रिय हो और रहने लायक बिलकुल भी न हो।

(Those who lack compassion) have to live in homes with dilapidated doors and crumbling walls. Their homes are nothing but cramped unshaded spaces, bare dwellings which are uninhabitable.

जं दियहं दारुण-दूसहेहिं दारिद्ददोस दुहिएहिं ।
सीऊण्हायपरिसीएहिं कीरंति कम्ममाइं ॥६९॥

(जो जीवदयाविहीन हैं) वे दारुण परिस्थितियों में जीते हैं, दरिद्रता-दोष से दुःखी रहते हैं और भीषण गर्मी तथा कड़ाके की सर्दी में भी उन्हें दिन-भर अनवरत श्रम करना पड़ता है।

(Those who lack compassion) are afflicted by hardship and poverty and have to brave the freezing cold and extreme heat to carry out backbreaking labour all day without any respite.

जं परघरपेसणकारएहिं सीयलविरसरूक्खाइं ।
भूजंति अवेला भोयणाइं परिभूयलद्दाइं ॥७०॥

(जो जीवदयाविहीन हैं) वे दूसरों के घर में काम करने पर मजबूर हैं, उन्हें ठण्डा, नीरस और रूखा भोजन अनादर से प्राप्त होता है, वह भी अबेला में।

(Those who lack compassion) work as slaves at the homes of others. They eat cold, dry and tasteless food given to them well after mealtimes, with insults thrown in.

जं दुसहुदुम्मुह दुक्कलत्त निच्चं च कलह सीलेहिं।
तेहिं समं चियं कालो निज्जइ अच्चंतदुहिण्हिं ॥७१॥

(जो जीवदयाविहीन हैं) उन्हें दुर्भग, कठोर वचन कहनेवाली, सदा कलह करनेवाली पत्नी मिलती है।
ऐसी दुःखदायी पत्नी के साथ रहकर वे अत्यन्त कठिनाई से अपना जीवन गुज़ारते हैं।

(Those who lack compassion) are compelled to spend their lives in extreme misery. Their spouse is shrewish, intolerable, vicious, quarrelsome, and verbally abusive. She causes them grief at every turn.

जं मइलिय चीर-नियंसणेहिं सिर लूक्ख-पोट्ट-चलणेहिं।
परिसक्किज्जइ दीणं आहारं पत्थमाणेहिं ॥७२॥

(जो जीवदयाविहीन हैं) उनके कपड़े मैले हैं, उनका सिर मण्डित है तथा पेट और पैर कुपोषण से सूख गये हैं। वे दीन प्राणी भोजन की भीख माँगते भटकते हैं और दुत्कारे जाते हैं।

(He who lacks compassion) is reborn as a poor wretched man dressed in filthy rags with a tonsured head, hungry belly and cracked feet. He is thrown out when he begs for food.

जं खास-सा स-सिर-वेयणाहिं खय-कोढ-चक्खु-रोगेहिं।
अट्ठिभंगेहिं य वेयणाओ विविहाओ पाविति ॥७३॥

(जो जीवदयाविहीन हैं) वे खाँसी, श्वास रोग, सिर की वेदना, क्षय रोग, कोढ़, नेत्र रोग तथा हड्डी के रोगों से जकड़े रहते हैं।

(He who lacks compassion) has to suffer from afflictions and diseases like cough, asthma, headaches, tuberculosis, leprosy, diseases of the eye and orthopaedic diseases.

जं इट्ठ-विओगाकंदणाहिं दुव्वयणदुमिय मणेहिं।
पिज्जइ लोणंसुजलं दुहमसमं उव्वहतेहिं ॥७४॥

(जो जीवदयाविहीन हैं) वे इष्टवियोग के दुःख से आक्रंदन करते हैं, दुर्वचनों से पीड़ित हैं, उनके दुःखों की उपमा देना मुश्किल है और वे दुःख के खारे आँसू पीने पर मजबूर हैं।

(He who lacks compassion) suffers the loss of a loved one. His heart is anguished by the abusive words hurled at him constantly. So acute is his grief that it cannot be compared with anything else! He swallows his salty tears and bears the burden of misery.

जं काणा-खोडा-वामणाय, तह चेव रूव-परिहीणा ।
उप्पज्जन्ति अणंता भोगेहिं विवज्जिया पुरिसा ॥७५॥

(जो जीवदयाविहीन हैं) ऐसे अनन्त मनुष्य काने, कुबड़े, ठिगने, छिन्न भिन्न अंगोंवाले होते हैं तथा भोगों से विवर्जित जीवन जीते हैं।

(He who lacks compassion) is reborn cross-eyed and hump-backed. He is short, has defective limbs, and lacks any semblance of attractiveness. He shall never experience any worldly pleasures.

इयं जं पावित्तिय दुहसयाइं जणहिययसोसजणयाइँ, ।
तं जीवदयाए विणा पावाण वियंभियं एयं ॥७६॥

(जो जीवदयाविहीन हैं) वे इस प्रकार के हृदय का शोषण करनेवाले सैकड़ों दुःखों को झेलते हैं। यह सब जीवदयाविहीनता की वजह से उपजे पापों का दुष्परिणाम है।

In this manner, those who lack compassion suffer from hundreds of heartbreaking sorrows which arise due to the sin of lack of compassion.

त चेव जोणिलक्खा भमियव्वं पूण जीव! संसारे ।
लहिऊण माणुसत्तं जइ ण कुणसि उज्जमं धम्मं ॥७७॥

हे जीव! मनुष्य भव पाकर भी यदि धर्म में उद्यम नहीं किया तो लाखों योनियों में भ्रमण करते रह जाओगे।

O jīva, if you do not make focused efforts to practise dharma despite being a human then you will end up wandering in the ocean of transmigration for lakhs of births.

नरएसु दुस्सहवेयणाओ पत्ताओ जाइं पइ मूढ! ।
जइ ताओ सरसि इण्हिं भत्तं पि न रुच्चए तुज्झ ॥७८॥

हे मूढमति! नरक में इतनी दुःसह वेदनाओं को सहा है, अगर वे याद आ जाएँ तो भोजन से भी रुचि उठ जायेगी।

O foolish one, you have suffered unendurable agonies in hell. If you were to recall them, it would turn you off your food!

अच्छंतु ताव नरया जं दुक्खं गब्भरुहिर-मज्झम्मि ।
पत्तं च वैयणिज्जं तं संपइ तुज्झ वीसरियं ॥७९॥

नरकों की बात तो रहने दो, गर्भ-रुधिर के बीच में जो भयंकर दुःख भोगा है उसे भूल गये हो।

Leave aside hell, you have forgotten the miseries that you had to endure when you were in a blood-filled womb.

भमिरुण गब्ध-गहणे दुक्खाणि य पाविरुण विविहाइं ।
लब्धइ माणुस-जम्मं अणेगभवकोडिदुल्लभं ॥८०॥

भवों के भयानक जंगल में भटककर विविध दुःखों को पाकर जीव करोड़ों भवों में भी दुर्लभ मनुष्य जन्म को प्राप्त करता है।

Wandering in the forest of wombs, suffering from various sorrows, you have to suffer through many crores of births before you get the extraordinary opportunity and good fortune of being born a human.

तत्थविय केई गब्धे मरति बालत्तणे य तारुण्णे ।
अण्णे पुण अंधलया जावज्जीवं दुहं तेसिं ॥८१॥

मनुष्य जन्म मिल भी गया तो कई जीव तो गर्भ में ही मर जाते हैं, कई बाल्यावस्था में और कई यौवन में। कई जीव जन्मान्ध होकर आजीवन दुःखी रहते हैं।

Even upon attaining human birth, some die in the womb. Some die as children, and some as youths. And some are born blind. Humans lead wretched sorrow-filled lives.

अन्ने पुण कोटियया खयवाहीगहिय पंगू मूगा य ।
दारिद्र्देणऽभिभूया पर-कम्म-करा नरा बेहवे ॥८२॥

पुनः कई जीव कुष्ठ रोग से पीड़ित, क्षयरोग से पीड़ित, अपंग, मूक, दरिद्र और दूसरों की सेवा करने पर मजबूर होते हैं।

Further, many humans suffer from diseases like leprosy and tuberculosis, some are differently abled, unable to speak, have to bear the brunt of poverty and are compelled to serve others to make a living.

थेवाण होइ दव्वं तम्मि य जल-जलण-चोरराईहिं ।
अवहरियम्मि य संते तिव्वयरं जायए दुक्खं ॥८३॥

कुछ ही लोगों के पास धन होता है। अगर वह धन जल, अग्नि, चोर अथवा राजा के द्वारा हर लिया जाए तो तीव्र दुःख होता है।

Very few people possess wealth. And if they lose their wealth to floods, fire, thieves or rulers, it leads to intense sorrow.

पविसंति समरमज्झो खग्गुग्गयसिहिफुल्लिगदुप्पिच्छे ।
सागरमज्झोऽविहहा अत्थस्स समज्जणे पुरिसा ॥८४॥

धन कमाने के लिये पुरुष ऐसे भीषण युद्ध में कूद पड़ता है जहाँ तलवारों के टकराने से उत्पन्न अग्नि

की चिंगारियाँ की वजह से देखना भी मुश्किल हो जाता है। अर्थोपार्जन के लिये मनुष्य सागर में भी प्रवेश करता है।

For the sake of earning money, men enter battlefields illuminated by the sparks of fire produced by the clashing of swords. They take part in horrific wars which are difficult to even look at. Many people cross the oceans to make a living.

इय नाऊण असारं संसारं दुल्लहं च मणुयत्तं ।
जण! कीरउ जीवदया जा विहडइ सव्वदुक्खाइं ॥८५॥

हे मनुष्य! इस प्रकार संसार की असारता को जानकार, दुर्लभ मानव जीवन को न गँवाकर जीवदया करो, जो कि सब दुःखों का नाश करती है।

Thus, this world and all its accoutrements are worthless. Only human birth is worthwhile. O jīva, realise this and practise compassion because it has the power to destroy all sorrow.

भवलक्खेसु वि दुलहं संसारे मूढ जीव! मणुयत्तं ।
तेण भणिमो अलज्जिर अप्पहियं किं न चिंतेसि? ॥८६॥

अरे मूढमति ! संसार में लाखों भवों में भी मनुष्य जन्म दुर्लभ है।
अरे निर्लज्ज मूढमति ! आत्महित की चिन्ता क्यों नहीं करते?

O foolish one, human birth is the rarest of the rare. You attain it with great difficulty after lakhs of births! Shameless fellow, why don't you worry about salvation?

दियहाइ दोवि तिन्निवि अद्धाणं होइ जं तु लग्गेण।
सव्वायरेण तस्स वि संबलए उज्जमं कुणासि ॥८७॥

दो-तीन दिन के प्रवास के लिये भी पूरी तैयारी करते हो, पूरे आदर से पाथेय ले जाने का उद्यम करते हो।

Even when you embark upon a short journey of two or three days you respectfully ensure that you are carrying enough provisions.

जो पुण दीह-पवासो चउरासिजोणिलक्खनियमेण ।
तस्स तव-सील-मइयं संबलयं किं न चिंतेसि? ॥८८॥

परन्तु जहाँ चौरासी लाख योनि जितना दीर्घ प्रवास है, उसके लिये उचित पाथेय के रूप में तप एवं शीलमयी आचरण क्यों नहीं करते?

When you know that your journey is arduous, as long as 84 lakh births! Why don't you take the trouble to carry the right provisions for this journey? The right provisions for this journey are tapa {penance} and śīla {virtue}.

पहरा दियहा मासा जह जह संवच्छराइं वोलिति।
तह तह मूढ! वियाणसु आसन्नो होइ ते मच्चू ॥८९॥

अरे मूढमति! जैसे जैसे प्रहर, दिन, महीने और वर्ष बीतते जा रहे हैं, वैसे-वैसे मृत्यु समीप आती जा रही है। इसे बात को जान लो।

O foolish ones, as the hours, days, months and years pass by, your death is inching closer. Know this.

केदियहं वाससयं तस्स वि रयणीसु हीरण अद्धं।
किंचि पुण बालभावे गुणदोस अयाणमाणस्स ॥९०॥

सेसं कम्मेण वियावडाण अद्धाण-खेय-खिन्नाणं ।
वाहिसय-पीडियाणं जराइं संखंडियाणं च ॥९१॥

सौ वर्षों में दिन ही कितने होते हैं? उनमें भी आधे तो रात में निद्रावस्था में ही चले जाते हैं। और जीवन का कितना बड़ा भाग गुणदोष से अनभिज्ञ बचपन में नष्ट हो जाता है!

शेष समय कामकाज की व्यस्तता में, प्रवास की थकान में, सैकड़ों व्याधियों से पीड़ित, बुढ़ापे से जर्जर दशा में नष्ट हो जाता है।

How many days are there in a hundred years? Of them, half are lost to sleep. Of the remaining half, some are spent in a state of childhood where one is unable to distinguish between the good and the bad.

The remaining time is lost in work-related activities, weariness from constant travel, and battling hundreds of illnesses in old age and infirmity.

जस्स न नज्जइ कालो ण य वेला न य दियहपरिमाणं ।
नारए वि णत्थि सरणं णेइ बला दारुणो मच्चू ॥९२॥

मृत्यु भयंकर है। इसके आने का समय कोई नहीं जानता। यदि जान भी लिया तो मृत्यु से बचने के लिये कोई शरण नहीं। मृत्यु भयानक है यह ज़बरदस्ती जीव को उठा ले जाती है।

Death is horrible. No one knows when it will strike. And even if they were to know, there is no way of saving oneself from death. It forcibly snatches away one's life.

इय जाव न चुक्कसि एरिसस्स खणभंगुरस्स देहस्स
जीवदयाए जुतो तो कुण जिणदेसियं धम्मं ॥९३॥

इसलिये जब तक इस क्षणभंगुर शरीर में निवास कर रहे हो, जीवदया को धारण कर जिनकथित धर्म का पालन करो।

Hence, until you become free from this insubstantial, impermanent cage called the body, follow the teachings of the Jinas by practising compassion.

जस्स दया तस्स गुणा जस्स दया तस्स उत्तमो धम्मो ।
जस्स दया सो पत्तं जस्स दया सो जए पुज्जो ॥९४॥

जिसमें दया है वह गुणी है, जिसमें दया है उस में उत्तम धर्म है, जिसमें दया है वही पात्र है, जिसमें दया है वही पूज्य है।

He who is compassionate has great qualities. He practices the highest dharma, and only he is truly worthy and merits worship.

जस्स दया सो तवस्सी जस्स दया सो य सील-संजुतो ।
जस्स दया सो नाणी जस्स (दया) तस्स निव्वाणं ॥९५॥

जिसमें दया है वह तपस्वी है, जिसमें दया है उसमें शील है, जिसमें दया है वही ज्ञानी है, जिसमें दया है उसी का निर्वाण होगा।

He who is compassionate is truly practising penance. He has good character. He is truly wise and shall attain liberation.

जो जीवदया-जुतो तस्स सुलद्धो य माणुसो जम्मो ।
जो जीवदया-रहिओ माणुस-वेसेणं सो पसुओ ॥९६॥

अहवा दूरप णट्ठो संपइ पसवत्तणस्स सो पुरिसो ।
जो जीवदयाजुतो करेई जिणदेसियं धम्मं ॥९७॥

जो जीवदयायुक्त है उसका मनुष्य जन्म सफल है। जो जीवदयारहित है वह मनुष्य के वेश में पशु समान है। अथवा जो जीवदयायुक्त होकर जिनोपदेशित धर्म का पालन करता है उसने अपना पशुत्व नष्ट कर लिया है

One who possesses compassion has made his human birth a success. One who is bereft of compassion is like an animal in human form. In other words, the compassionate person who follows the dharma taught by the Jinas destroys his brute nature.

सीये उन्हे य तवं जइ तप्पइ उद्धबाह-पंचग्गी ।
दाणं च देइ लोए दया विणा णत्थि से किंचि ॥९८॥

दयाविहीन व्यक्ति ठण्ड और गर्मी में हाथ ऊँचे करके खड़ा होकर पञ्चाग्नि तप का पालन करे और दान भी दे, तो भी उसे कोई फल नहीं मिलता।

One who does not have compassion does not gain anything despite carrying out penance in the cold of winter and the heat of summer by standing with arms raised, surrounded by five fires. Despite generously giving alms to the poor, he makes no spiritual gains.

Note:

Compassion is the key to spiritual development. Dharma is not possible without compassion. In the absence of compassion, all actions are worthless.

थेवो वि तवो थेवं पि दिन्नयं जं दयाए संजुतं ।
तं होइ असंखगुण-बीयं जह वाससंपत्तं ॥९९॥

दया-युक्त व्यक्ति थोड़ा भी तप करे, थोड़ा भी दान करे तो उसका वर्षा ऋतु में बोये हुए बीज समान बहुत फल मिलता है।

Just like a seed sown during the monsoon season, the compassionate one reaps innumerable benefits for his acts of asceticism and generosity, irrespective of how minor they are.

एक्का वि जेण पत्ता नियदेहे वेयणा पहारेहिं
न कुणइ जइ जीवदया सो गोणो नेय माणुस्सो ॥१००॥

जिसने निजदेह पर प्रहार की वेदना एक बार भी सही हो और फिर भी जीवदया नहीं पालता वह मनुष्य नहीं बैल है।

Anyone who has ever felt the pain of a single blow to his body and still does not practise compassion is a brute, not a human.

जं नारयाण दुक्खं तिरियाणं तह य माणुसाणं च
तं जीवपीडजणियं दुव्विसहं होइ लोयम्मि ॥१०१॥

नारकी, तिर्यच तथा मनुष्य जो भी दुःख झेलते हैं वे दूसरे जीवों को पीड़ा देने की वजह से उत्पन्न हुए हैं। और ये दुःख भी ऐसे हैं कि इस लोक में दुःसह हैं।

All the pain experienced by hellish beings, sub-humans and humans is a consequence of the pain caused by them to other living beings. That pain is exceedingly intolerable.

कालो अणाइणिहणो जीवो दव्व-गुणेहिं अविणासी
तो मा कीरउ पावं जण! जीवदयालूओ होह ॥१०२॥

हे जन! काल तो अनादिनिधन है, कालद्रव्य अपने गुणों के कारण अविनाशी है। तो पाप मत करो, जीवों के प्रति दया पालो।

Time is without beginning or end. It is indestructible because of its attributes. Hence, o humans, do not commit sins. Be compassionate towards all living beings.

जो कीरइ जीवदया अव्वो किं ण्होरएण जीवाणं ? ।
दुक्खाणं अणागमणे तह सुक्खाणं आगमणे ॥१०३॥

दुःखों का अनागमन हो और सुखों का आगमन हो इसके लिये सब जीवों पर कृतज्ञता भाव से जीवदया क्यों नहीं पालते?

Why don't people practise compassion out of gratitude towards all living beings? It would help them avoid sorrow and attract happiness.

सो होइ बुद्धिमंतो अलिऐन जो परस्स उवघाई ।
सो होई सुही लोए जो खाइ न मज्ज-मंसाइ ॥१०४॥

जो ऋद्धिमान होता है, वह अज्ञानवश भी दूसरों का उपघात नहीं करता। लोक में वे लोग सुखी हैं जो मद्य-मांस का सेवन नहीं करते।

He who never harms others even unknowingly gains supernatural powers. A person who never consumes alcohol and meat finds true happiness in this world.

सो पंडिओ ति भणइ जेण सया नेय खंडियं सीलं ।
सो सूरु चारहडो इंदियरिऊ निज्जिआ जेण ॥१०५॥

पण्डित तो वह है जिसने कभी शीलव्रत का खण्डन नहीं किया। जिसने सभी इन्द्रिय-रूपी शत्रुओं को जीत लिया हो वही सच्चा शूरवीर है ।

One who has never broken his vow of celibacy is a true scholar. He who has conquered his sensual desires is the greatest warrior.

रिद्धो जुव्वणगामो रइसुह सोहग्ग सुव्वयं सीलं ।
सो जरधाडी पहओ मयरद्धयराइणो मच्चु? ॥१०६॥

जो ऋद्धिमान है, शक्तिमान है, जिसे रतिसुख का सौभाग्य मिला है पर सुव्रत सहित है, (श्रेष्ठ चारित्र पालता है) वह बुढ़ापे को जीत लेता है। (जो श्रेष्ठ चारित्र नहीं पालते) वे काम वासना के अधीन होकर मृत्यु पाते हैं।

Despite possessing supernatural powers and virility and being in a position to enjoy sensual pleasures, if one practices appropriate conduct and follows the proper vows and restraints, he wins over old age. Those who surrender to lust attain death.

सयणस्स वि मज्झगयं ओयरिउं लेइ महु वालेहिं
मारेइ नवरि मिल्लइ घोर जरारक्खसी पुरिसं ॥१०७॥

स्वजनों के बीच में रह रहे पुरुष को भी वृद्धावस्था-रूपी राक्षसी नीचे अवतरण कर ज़बरदस्ती उठा ले जाती है। वह पुरुष के साथ मिलकर उसे मार देती है।

The demoness of old age plucks a person from the bosom of his family and kills him.

भवरन्ने जीवमओ जो गहिओ तेण मरण-सीहेण ।
असमत्था मोएउं सयणा देवा या इंदा वि ॥१०८॥

भव-रूपी अरण्य में जिस जीव-रूपी मृग को मृत्यु-रूपी सिंह ने पकड़ लिया उसे स्वजन तो क्या, देवता और स्वयं इन्द्र भी बचाने में असमर्थ हैं ।

In the forest of transmigration, anyone caught by the lion of death is beyond rescue. Neither his family members nor demigods nor Indra himself can save him.

तुम्हं महल्लयाइं खइयाइं जेण कालसप्पेण ।
सौ किं कह वि पलाओ मओ व्व वीसंत्थया जेणं ॥१०९॥

जिस कालसर्प ने आपके पूर्वजों को ग्रसित कर लिया, क्या वह कहीं भाग गया है? या फिर वह मर गया है कि आप इतने बेफ़िक्र हैं?

Has the serpent of death that devoured your ancestors run away somewhere? Or has it died that you are so confident that you will escape death?

जरकेसर वीहत्थओ दढदाढापिच्छ ओ
वयणकररुह भिदओ वियरइ मरणमइंदओ ॥११०॥

मृत्यु-रूपी सिंह जरा-रूपी केसरी केशों के कारण वीभत्स है, कठोर दाँतों की वजह से भयंकर है। उसके दाँत और नख रुधिर बहा सकते हैं। वह सिंह आपके समक्ष विचर रहा है।

Old age is the mane of the lion of death. His deadly fangs and cruel nails are capable of tearing you apart. He awaits you.

जो जीववहाए जुत्तए दारुणए मंसरसेण पुट्ठए ।
परदुक्ख अयाणमाणए से पुरिसे न हु दंसणिज्जए ॥१११॥

जो जीववध में लिप्त है, दारुण मांसरस से पुष्ट है, परदुःख से अनभिज्ञ है, ऐसा मनुष्य दर्शन करने योग्य नहीं है।

One who is full of violence, fearsome, strengthened by cruelly eating the meat of animals, and incapable of understanding others' pain is not even worth looking at.

नियसलिले समदुक्खसोक्खए जीयलोभे सुतोसए
जो जीवदयाए जुत्तए से पुरिसे जए पूयणिज्जए ॥११२॥

जो आत्मलीन हैं, सुख-दुःख में समता भाव रखते हैं, लोभविजेता हैं और जीवदयायुक्त हैं, ऐसे पुरुष जगत में पूज्य हैं।

He who is immersed in his true self remains calm in joy and grief. He has conquered greed. He is compassionate. He is worthy of being worshipped by the whole world.

जइ इच्छह सयलसुखए अह सायहु परममुखए
ता होह दयाए जुतए करह य जिणाण वुत्तए ॥११३॥

जो आप इच्छा रखते हैं सकल सुखों की अथवा परम मोक्ष के साधक हैं, तो दयायुक्त हो जायें और जिनवचन का पालन करें।

If you wish to enjoy all the happiness in this world or seek the supreme bliss of liberation, practice universal compassion and follow the teachings of the Jinas.

सो सव्वस्स वि पूज्जो सव्वस्स वि हियय आसमो होइ ।
जो देसकालजुतं पियवयणं जाणए वुत्तुं ॥११४॥

वे सबके लिये पूज्य हैं, सबके हृदय को प्रिय हैं जो देश और काल के अनुरूप प्रियवचन बोलना जानते हैं।

Everyone loves one who knows how to speak pleasantly keeping in mind the current local customs.

जं कल्ले काय व्व अज्जं चिय तं करेह तुरमाणा ।

बहु विग्घो मुहुत्तो मा अवरणं पडिक्खेह ॥११५॥

जो कल करना हो, वह आज और अभी कर लें। एक मुहूर्त में भी अनेकों विघ्न आते हैं इसलिये दोपहर की भी राह मत देखना।

Immediately finish today what you intend to accomplish tomorrow. Even a short period like a muhūrta {48 minutes} is full of many obstacles. So begin now, do not even wait for the afternoon.

जीवदयापगरणं